शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला'

Date ______ Page ______

शीर्षक- गाँधीजी और माँ

लेखक- पंडित रामनन्दन मिश्र

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- सन 1947 में गाँधीजी के पटना प्रवास के दौरान लेखक का परिचय किस प्रकार कराया गया?

उत्तर:- सन् 1947 में महात्मा गाँधीजी पटना प्रवास के दौरान डॉ० महमूद की कोठी पर ठहरे हुए थे। गाँधीजी के साथ बहुत सारे ऐसे लोग थे जो रामनन्दनजी को नहीं पहचानते थे। मृदुला साराभाई ने गाँधीजी से लेखक का परिचय कराते हुए कहती हैं ये बिहार सोशलिस्ट पार्टी के प्रधानमंत्री हैं। यह सुनकर गाँधीजी हँस पड़े। मीठे स्वरों में मृदुला साराभाई की भर्त्सना की और बोले- मृदुला, यह तो मेरा रामनन्दन है। सोशलिस्ट पार्टी की पूँछ लगाकर तुमने इसकी कोई इज्जत नहीं बढ़ाई। वस्तुतः पंडित रामनन्दन मिश्रजी का गाँधीजी से काफी पुराना परिचय था। वे अच्छी तरह से रामनन्दनजी जानते-पहचानते थे।

प्रश्न:- लेखक से गाँधीजी कौन सी अन्तरंग बातें करना चाहते थे?

उत्तर:- लेखक के जीवन में गाँधीजी का काफी महत्व था। वे एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बापू की जघन्य हत्या के कुछ ही दिन पूर्व मेरी मुलाकात गाँधीजी से हुई थी। गाँधीजी लेखक महोदय से कुछ अन्तरंग बातें करना चाहते थे। दूसरे दिन पाँच बजे समयनिर्धारित हुआ। दूसरे दिन मिश्रजी निर्धारित समय पर पहुँच गये, लेकिन बापूजी पोलैण्ड के ~~एक~~ एक प्रतिनिधिमण्डल के साथ निकल रहे थे। उन्होंने मिश्र जी को देखा तो वे लौट पड़े। डायरी देखी। यह समय तो रामनन्दन जी के साथ बाहर टहलने का था। बापू को दुःख हुआ कि उनके इस कार्यक्रम में किसने हेर-फेर कर दिया। इन दिनों घनश्यामदास बिड़ला उनका कार्यक्रम बनाया करते थे। बापू जी ने बिड़लाजी को हिदायत दी कि बिना उनकी राय लिये बिना कार्यक्रम में कोई हेर-फेर न किया जाए।

बापू को अपनी पोती राधाबाई की प्रेमनिष्ठा की

शेष आगे-

Date: ______ Page: ______

कहानी रामनन्दन जी से कहनी थी। उन्होंने बताया कि किस तरह राधाबाई और दीपक चौधरी की शादी होने ही वाली थी कि दीपक एकाएक बैरिस्ट्री की डिग्री लेने विलायत चला गया। वहाँ से आने के बाद दोनों की शादी सम्पन्न हुई।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं०महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ

02/09/20

Date: ________ Page: ______

जयद्रथ-वध

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

हा! बन्धुओं के ही करों से बन्धु-गण मारे गये!
हा! तात से सुत, शिष्य से गुरु स-हठ संहारे गये।
इच्छा-रहित भी वीर पाण्डव रत हुए रण में अहो।
कर्तव्य के वश विज्ञ जन क्या-क्या नहीं करते कहो?

भावार्थ

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त महाभारत के युद्ध में योद्धाओं का आपस में क्या सम्बन्ध है उस पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि इस महाभारत के युद्ध में भाईयों का वध भाईयों के हाथ से हुआ क्योंकि दोनों ही परस्पर विरुद्ध पक्षों की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुए तथा पिता के हाथों पुत्र का वध हुआ। दुर्दमनीयता के साथ जो गुरु द्रोणाचार्य कौरव पक्ष की से लड़े उनका भी उनके ही शिष्य अर्जुन के हाथों से वध हुआ। वीर पाण्डव गणों की इस प्रकार का भयंकर युद्ध करने की तनिक भी इच्छा नहीं थी, किन्तु अनेकों कौरवों की दुर्दमनीयता के कारण युद्ध लड़ना पड़ा। कभी-कभी विद्वानों को भी कर्तव्य के वशिभूत होकर क्या-क्या नहीं करना पड़ता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जिन बातों को वे स्वयं अच्छा नहीं समझते उन कार्यों को भी परिस्थिति वश करने के लिए उनको बाध्य होना पड़ता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
07।09।20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, द्वितीय-पत्र
दिगंत - भाग - 2 - पद्य भाग

Date: ________ Page: ______

शीर्षक - कवित्त
कवि - भूषण

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं? इनका हिन्दी के पाठकों में बहुत सम्मान का कारण क्या है?

उत्तर:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। ये हिन्दी साहित्य में जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं। वीर रस के इस महान कवि ने फड़कती हुई मुक्तक शैली में छत्रपति शिवाजी और बुंदेल वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई हैं, इसी कारण हिन्दी पाठकों में सम्मान है।

प्रश्न: कवि भूषण की प्रमुख कृतियों का उल्लेख करें?

उत्तर:- महाकवि भूषण द्वारा रचित शिवराज भूषण (385 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान), छत्रसाल दशक (10 छंदों में छत्रसाल की वीरता का यशोगान) प्रमुख है। भूषण-हजारा, भूषण उल्लास इत्यादि प्रसिद्ध रचना भी है।

प्रश्न:- भूषण की पारिवारिक पृष्ठभूमि का परिचय दें।

उत्तर:- कवि भूषण का जन्म 1613 ई० में उत्तरप्रदेश के कानपुर के निकट एक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम सम्भवतः भूषण के भाई थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० क० सं० महा वि० सुरसेना, पूर्णियाँ
07/09/20